# चतुर धोबी

बर्मा की लोककथा

# चतुर धोबी

## बर्मा की लोककथा

धोबी अहूंग कीयांग अपने काम के लिए गाँव के सब लोगों से प्रशंसा पाता था. लोग समझते थे कि उसके पास कोई 'जादुई शक्ति' थी, जो कपड़ों को धो कर वह बर्फ से ढके पर्वतों समान चमका देता था. उसकी सफलता से जल कर उसका एक कपटी पड़ोसी उसे बर्बाद करने की योजना बनाता है. वह राजा को बहकाता है और राजा अहूंग कीयांग को एक असंभव काम करने का आदेश देता है. अहूंग कीयांग को राजा के स्लेटी हाथी को नहला कर ऐसे सफेद हाथी में बदलना है जिसका वर्णन पौराणिक कथाओं में मिलता है.

सीधा-सादा धोबी जानता है कि उसकी बुद्धि और परिश्रम ही वह सच्चा 'जादू' है जिसका वह उपयोग करता है-पर क्या उसकी बुद्धि और उसका परिश्रम उसे इस मुसीबत से बाहर निकाल पायेंगे?

बर्मा की इस लोक कथा में मनुष्य के चरित्र की दुर्बलता और मज़बूती का रोचक वर्णन किया गया है.

बहुत समय पहले, बर्मा के एक गाँव में धोबी अहुंग कीयांग कपड़े धोने के टब पर झुका कपड़े धो रहा था. टब से भाप निकल रही थी. वह कपड़ों को मल रहा था, रगड़ रहा था. सब लोग सोचते थे कि वह अपने टब में कोई जादू करता था, क्योंकि सफेद कपड़ों को वह बर्फ से ढके पहाड़ों जैसा और रंगीन कपड़ों को हीरों से सजे हुए मंदिरों जैसा चमका देता था. लोगों की प्रशंसा पाकर अहुंग कीयांग प्रसन्न होता था, लेकिन वह जानता था कि उसकी सफलता का कारण जादू नहीं, उसका परिश्रम था.

अहूंग कीयांग का पड़ोसी नैरेथू एक कुम्हार था और उससे ईर्षा करता था. "मेरा पड़ोसी मुझ से अधिक धनी है और अच्छे घर में रहता है," कुम्हार नैरेथू ने कहा. "ऐसा कैसे है कि वह मुझ से अधिक संपन्न है? देखो कैसे वह सारा दिन बस पानी में खेलता रहता है और गीत गाता रहता है. अपने मिट्टी के बर्तन बनाने में मैं भी उसके समान ही मेहनत करता हूँ, पर मेरी तो कोई प्रशंसा नहीं करता." नैरेथू ने अपने सामने रखे मिट्टी के ढेर को देखा, लेकिन उसे लगा कि गर्मी इतनी अधिक थी कि काम करना असंभव था. काम करने के बजाय वह छाया में लेट कर आराम करने लगा और अहूंग कीयांग के विरूद्ध षड्यंत्र रचने लगा.

नैरेथू जानता था कि उसे चालाकी से काम लेना पड़ेगा क्योंकि राजा पगान मीन को वह क्रोधित न करना चाहता था. शाही कपड़ों की धुलाई के लिए राजा सिर्फ अहूंग कौयांग पर भरोसा करता था. कई घंटे सोचने के बाद, अपने पड़ोसी की प्रतिष्ठा नष्ट करने के लिए और राजा पर अपना प्रभाव डालने के लिए, नैरेथू को एक कुटिल चाल अचानक सूझ गई. इस आशा से कि राजा उसे देखकर प्रभावित होंगे, कुम्हार ने अपना सबसे सुंदर रेशमी लॉन्ग्यी पहना और सिर को चमकदार रेशम के पट्टियों से लपेट लिया. उपहार में देने के लिए उसने अपनी दुकान से सबसे बढ़िया बर्तन चुन लिए और राजा से भेंट करने के लिए वह घर से चल पड़ा.

जब वह राजा पगान मीन के सामने उपस्थित हुआ तो नैरेथू ने निवेदन किया:

“एक हज़ार हाथियों के श्रेष्ठ स्वामी,” उसने कहा. “आप एक महान राजा हैं और संसार की सब उत्कृष्ट वस्तुओं को प्राप्त करने के अधिकारी हैं.”

“अहहह,” राजा बोला, उसे अपनी प्रशंसा सुनना अच्छा लगता था. “उत्कृष्ट चीज़ें मुझे अच्छी लगती हैं. क्या ऐसी चीज़ें यहाँ मेरे आसपास नहीं रखी हैं?” राजा ने जगमगाते सिंहासन, हीरों से सजे हुए मुकुट और सुनहरी छतरी की ओर संकेत किया.

“ओह, हाँ महाराज,” नैरेथू ने सहमत होते हुए कहा, “लगभग हर वस्तु.”

“लगभग!” झटके से सिंहासन पर खड़े होकर राजा ने ऊँची आवाज़ में कहा. “ यहाँ कौन सी ऐसी वस्तु है जो उत्कृष्ट नहीं है?”

“ओ गौरवान्वित महाराज,” दब्बूपन का ढोंग करते हुए नैरेथू झिझकते हुए बोला. “क्षमा चाहता हूँ. मैं आपके हाथी की बात कर रहा था.”

“मेरे हाथी में क्या कमी है?” राजा गरजा.

“वह स्लेटी रंग का है. सभी पौराणिक राजा सफेद हाथियों पर सवारी करते थे, इतिहास में ऐसा ही कहा गया है. निश्चय ही आपके पास भी एक सफेद हाथी होना चाहिए.”

हर कोई जानता था कि पगान मीन एक सफेद हाथी पाने को बहुत इच्छुक था. यद्यपि किसी ने भी सफेद हाथी देखा न था, लेकिन सफेद हाथी सर्वोत्तम प्रतिष्ठा का प्रतीक समझा जाता था. पगान मीन के लिए एक ऐसा पशु पकड़ कर लाने के लिए शिकारियों को थैले भर सोना और माणिक पुरस्कार में देने का प्रस्ताव भी था.

"मैं जानता हूँ कि आप सफेद हाथी कैसे पा सकते हैं," कपटी नैरेथू ने कहा, "अहूंग कीयांग को क्यों न आदेश दिया जाये कि वह आपके स्लेटी हाथी को नहलाये? निश्चय ही वह अपने जादू से उस हाथी को नहला कर सफेद बना सकता है." और अगर वह ऐसा नहीं कर पाया तो उसे राज्य से निर्वासित कर दिया जायेगा, उसने मन ही मन सोचा.

सफेद हाथी पाने की तीव्र इच्छा ने राजा पगान मीन की बुद्धि पर पर्दा डाल दिया. उसे नैरेथू की योजना बहुत पसंद आई. धोबी को अपना आदेश बताने के लिए राजा ने तुरंत एक संदेशवाहक उसके पास भेजा.

अहूंग कीयांग हक्का-बक्का रह गया. “अब मैं क्या करुं?” उसने सोचा “मैं एक स्लेटी हाथी को सफेद रंग का नहीं बना सकता. लेकिन अगर मैंने राजा के आदेश का पालन करने से मना कर दिया तो वह अवश्य ही मुझे निष्कासित कर देंगे.” स्थिती को अच्छी तरह भाँपने के लिए उसने संदेशवाहक से कुछ प्रश्न पूछे, जिसने उसे पूरी जानकारी दी. सारी रात धोबी इस समस्या के विषय में सोचता रहा. सुबह होने तक उसने उस मुसीबत से अपने को बचाने की युक्ति सोच ली.

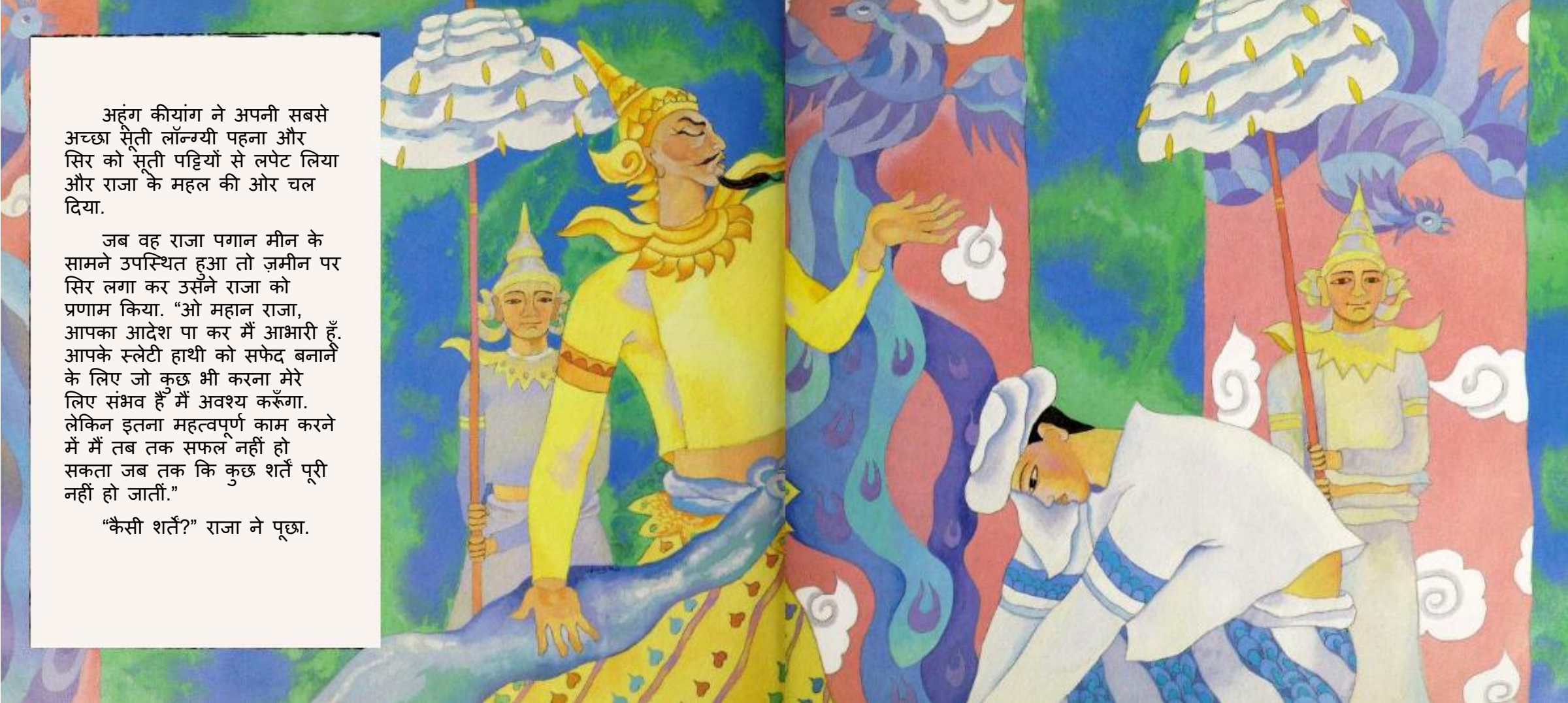

अहंग कीयांग ने अपनी सबसे अच्छा सूती लॉन्ग्यी पहना और सिर को सूती पट्टियों से लपेट लिया और राजा के महल की ओर चल दिया.

जब वह राजा पगान मीन के सामने उपस्थित हुआ तो ज़मीन पर सिर लगा कर उसने राजा को प्रणाम किया. “ओ महान राजा, आपका आदेश पा कर मैं आभारी हूँ. आपके स्लेटी हाथी को सफेद बनाने के लिए जो कुछ भी करना मेरे लिए संभव है मैं अवश्य करूँगा. लेकिन इतना महत्वपूर्ण काम करने में मैं तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि कुछ शर्तें पूरी नहीं हो जातीं.”

“कैसी शर्तें?” राजा ने पूछा.

“हाथी का महान स्नान जल उत्सव, थींगयान, के पहले दिन पर होगा,” अहंग कीयांग ने कहा, “उसी दिन पिछले वर्ष के बुरे कर्म धो दिये जाते हैं. स्नान के लिए राज्य के हर व्यक्ति को मटका भर कर गर्म, साबुन मिला पानी लाना होगा. और निस्सन्देह कुम्हार नैरेथू को मिट्टी का एक बड़ा टब बनाना पड़ेगा जिस में हाथी को खड़ा किया जा सके. हाथी को नदी में नहलाना व्यर्थ होगा, क्योंकि नदी का पानी मेरे साबुन की गर्म झाग को बहा कर ले जायेगा.”

सफेद हाथी पाने को बेताब राजा ने धोबी की सब शर्तें मान लीं.

नैरेथू को जब राजा का आदेश सुनाया गया तो वह मना न कर पाया. उसने एक बड़ी भट्ठी बनाने के लिए ज़मीन में बड़ा गड्ढा खोदा. फिर मिट्टी इकट्ठी कर के एक ढेर बनाया जो उसकी झोंपड़ी की सबसे ऊँची नोक जितना ऊँचा था. फिर मिट्टी को गड्ढे में बिछा कर उसने एक विशाल टब बनाया. मिट्टी को तपा कर सख्त करने के लिए उसने टब में ताड़ के पत्ते और फूस भर कर आग लगा दी.

थींगयान के दिन नैरेथू और उसके संबंधियों ने विशाल टब को गड्ढे से बाहर निकाला और उसे थकेल कर और खींच कर उस स्थान पर ले आए जहाँ हाथी को नहलाया जाना था. राज्य के हर नागरिक ने टब में गर्म, साबुन मिला पानी डाला. जब टब भर गया तो शाही साईस राजा के स्लेटी हाथी को उत्तेजित भीड़ के बीच में से लेकर आए. मिट्टी के टब के पास अहूंग कीयांग अपना काम करने के लिए तैयार खड़ा था. जब पानी के अंदर जाने के लिए हाथी ने अपना एक पाँव उठाया, वहाँ खड़ी भीड़ में चुप्पी छा गई.

लेकिन जैसे ही हाथी ने अपना भारी-भरकम पाँव टब के बीच में रखा, चटकने की ज़ोर से आवाज़ हुई. एक ही पल में टब चकनाचूर हो गया और पानी की धारा पगान मीन, अहुंग कीयांग और आसपास खड़े लोगों की ओर बहने लगी.

"तुम," नैरेथू की तरफ संकेत करते हुए पगान मीन गुस्से से गरजा. "तुम किस प्रकार के कुम्हार हो? हाथी के लिए जो टब तुम ने बनाया था, हाथी उस में खड़ा ही न हो पाया? निकल जाओ यहाँ से, मैं तुम्हें निष्कासित करता हूँ. जाओ, उत्तरी पहाड़ों में जाकर रहो."

टब के बिना, अहुंग कीयांग ने निवेदन किया, हाथी को नहलाने का काम मैं ठीक से नहीं कर सकता. निराश होकर पगान मीन ने अपने स्लेटी हाथी पर बैठ कर त्योहार के जुलूस में भाग लेने का निर्णय लिया.

थींगयान की समाप्ति पर अहूंग कीयांग ने अपने धोबीघाट में कपड़े धोने का काम फिर से शुरु कर दिया. महान स्नान की घटना के कारण उसकी लोकप्रियता बढ़ गई थी और कई और लोग भी उससे अपने कपड़े धुलवाने लगे थे. फिर भी वह नैरेथू के लिए दुःखी था. उस बेचारे का क्या होगा? वह अच्छे बर्तन बना लेता थी पर अपने कार्य से कभी संतुष्ट न होता था.

# लेखक का नोट

वर्षों तक बर्मा के विषय में जानकारी प्राप्त करना कठिन रहा है. पत्रकारों को वहाँ जाने की अनुमति न मिलती थी और न ही वह कोई सूचना इकट्ठी कर पाते थे. अभी हाल तक बर्मा में आने के लिए सिर्फ सात दिनों का परमिट ही मिलता था.

बर्मा में 120 जातीय समूह रहते हैं. इसका क्षेत्रफल अलबर्टा, कैनेडा से बड़ा और टेक्सस से छोटा है. यह अनेक विषमताओं वाला देश है. यहाँ पर्वत हैं, घाटियाँ हैं ट्रॉपिक्ल जंगल हैं, हरी-भरी नीची समतल भूमि है, और ऐसे भूभाग भी हैं जहाँ वर्षा के मौसम के बीच सूखा पड़ता है. देहाती इलाकों में ढहते हुए सदियों पुराने पौगोडा दिखाई देते हैं तो शहरी इलाकों में ऐसे मंदिर हैं जिनकी चमकती छतों पर सोने के पत्तर लगे हैं. बर्मा के अधिकतर लोग बुद्ध धर्म के अनुयायी हैं.

नगरों में लोग आरामदायक आधुनिक घरों में रहते हैं लेकिन गाँवों के लोग बाँस और फूस के घरों में, बिजली के बिना, रहते हैं. हर गाँव में एक ही कुआँ होता है जहाँ से सब गाँववाले पानी लेते हैं.

थींगयान, जल त्योहार, वर्ष का सबसे लोकप्रिय त्योहार है. इसे अप्रैल के मध्य में मनाया जाता है, जब गर्मी बहुत तीव्र होती है और मौसम शुष्क होता है. यह बर्मा के नये वर्ष का त्योहार है और तीन दिन तक मनाया जाता है. इन दिनों जो कोई भी घर से बाहर आता है उसे पानी से भिगो दिया जाता है.

थींगयान एक रंगबिरंगा त्योहार है. इन दिनों जुलूस निकाले जाते हैं और नाट्यकला का प्रदर्शन किया जाता है. हर आयु के दर्शक ज़मीन पर बिछी चटाइयों पर बैठ कर, इन नाटकों का आनंद लेते हैं. लोग अपने साथ खाने-पीने का सामान भी ले आते हैं.

त्योहार के आमोद-प्रमोद के बीच लोग परंपरागत रस्मे पूरी करना नहीं भूलते. युवा अपने बड़ों के बाल धोते हैं. बुद्ध की मुर्तियों को औपचारिक ढंग से साफ किया जाता है और सन्यासियों को विशेष भोजन खिलाया जाता है. और सफेद हाथी को अभी भी लोग सर्वोत्तम प्रतिष्ठा का प्रतीक समझते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से आजतक किसी ने ऐसा पशु बर्मा में नहीं देखा.

समाप्त